



जिलेट, एक ब्लेड का एटलस

01 अप्रैल 2058

मैं अपनी ज़िंदगी के आखिरी महीने में दाखिल हो चुका था, एक ऐसी मियाद जिसे अब और टाला नहीं जा सकता था।

तिरानवे साल की उम्र, और मैं हमेशा यही समझता रहा कि मैं मछुआरा हूँ।

पता चला कि मुझे घंटा कुछ समझ नहीं आया था।

किसी ने एक तस्वीर में मुझे उतारा था: लकड़ी की नाव, हाथ में बंसी, पीछे वेसुवियस।

जैसे मैं वह आदमी हूँ जिसने सीख लिया हो कि काँटा कहाँ डालना है। वह आदमी जो जानता है।

फिर मैंने तस्वीर को ज़्यादा गौर से देखा।

जो मछली मैंने पकड़ी है वह हिल नहीं रही। वह साँस के लिए तड़प नहीं रही।

वह पढ़ रही है। वह जिलेट नैरेटिव पढ़ रही है। अंग्रेज़ी में, स्पेनी में, चीनी में, अम्हारिक में, उर्दू में, अरबी में।

मछली मैंने पकड़ी। मछली मेरा अध्ययन कर रही है।

बरसों तक मैं मानता रहा कि विकास का मतलब है ज़्यादा ज़बानें बोलना, ज़्यादा नक्शे रखना, ज़्यादा संस्करण।

बाईस संस्करण। पाँच, कई-कई खंडों वाले। सत्रह, जिनके खंड गिने तक नहीं। पर साला, मैंने आखिर लिखा कितना?

फिर मैंने समझा कि विकास यह नहीं कि तुम कितने पानी से होकर गुज़रे हो। यह है कि जब तुम काँटे से लटके हो, तब भी तुममें पढ़ने लायक होश बचा है या नहीं।

अप्रैल फ़ूल वह मज़ाक़ नहीं जो तुम दूसरों के साथ करते हो। यह वह मज़ाक़ है जो ज़िंदगी तुम्हारे साथ करती है, जब तुम खुद को मछुआरा समझते हो और पता चलता है कि मछली तुम हो।

और अगर किस्मत अच्छी हो, तो उसी दिन तुम पढ़ना भी सीख जाते हो।

मैंने उस दिन सीखा। पर मैं पहले ही अंत पर था, और अंतिम रेखा कोई याद नहीं छोड़ती। बस अविस्मरणीय होने की संभावना छोड़ती है।

फर्दिनांदो